बाल विमर्श

निर्मल कौर शोध छात्रा,

हिन्दी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

सारांश

एक राष्ट्र के निर्माण में युवा पीढ़ी का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आज के बच्चे आने वाले कल के नागरिक हैं। बच्चे ही देश के भावी कर्णधार हैं। किसी भी देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाना है तो बच्चों के विकास की आवश्यकता है। अच्छे व्यक्तित्व से बच्चे ही देश को एक सुनहरा भविष्य प्रदान करने में सक्षम हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा हैं, " मैं हैरत में पड़ जाता हूँ कि किसी व्यक्ति या राष्ट्र का भविष्य जानने के लिए लोग तारों को देखते हैं। मैं ज्योतिष की गिनतियों में दिलचस्पी नहीं रखता, मुझे जब हिन्दुस्तान का भविष्य देखने की इच्छा होती है, तो बच्चों की आँखों और चेहरों को देखने की कोशिश करता हूँ। बच्चों के भाव मुझे भावी भारत की झलक दे जाते है"। कुछ विद्वान बच्चों को मिट्टी के घड़े के समान बताते है, वह कहते है कि उसे किसी भी रूप में ढाला जा सकता है। अगर बच्चों की कोमलवस्था में ही उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया जाए तो वह हमारे देश और समाज के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। मानव के व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे अहम भूमिका बचपन ही निभाता है। बच्चा जो भी अपने आस- पास देखता है, सुनता है, उसी को ग्रहण करता है। बच्चे की प्रथम गुरू उसकी माँ होती है और उसका पहला स्कूल उसका परिवार होता है। बच्चा पहले माता- पिता, आस- पड़ोस से सीखता है और फिर समाज से बहुत सी चीज़ों को ग्रहण करता है। बच्चों के पास जिज्ञासा अधिक होने के कारण वह प्रश्न करता है और सही उत्तर को जानने की भी जिज्ञासा रखता है। इसी तरह बच्चों को अच्छे मानव, अच्छे नागरिक बनाने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता होती है, वह गुण बाल मनोभूमि में अंकुरित किये जाने चाहिए।

बीज शब्द विमर्श, नागरिक, जिज्ञासा, पहेली, मासूम, संभावना, चिंतन, मोहक, अभिव्यक्ति, मनोभूमि, नैतिक मूल्य, बाल, बाल्यावस्था, आवश्यकता, हिंसात्मक।

परिचय

बाल विमर्श से अभिप्राय बच्चों के लिए लिखित साहित्य के चिंतन, दशा और संभावनाओं पर आधारित विमर्श है। हिन्दी साहित्य में बाल विमर्श का अप्रत्यज्ञ रूप से आरंम्भ माने तो सूरदास ही इसके प्रथम रचनाकार माने जा सकते हैं। उन्होंने कृष्ण भगवान के बाल- लीलाओं का मोहक वर्णन अपने पदों में किया है। अमीर खुसरो की पहेलियाँ, ढकोसले आदि में बच्चों के लिए आकर्षक सामग्री मिलती है। समाज में सभी वर्गों के मध्य में एक ऐसा वर्ग भी है, जो नन्हें बच्चों का वर्ग है। जो शान्त, मासूम और आज की भाग- दौड़ भरी ज़िन्दगी से त्रस्त है, जिनकी ओर ध्यान नहीं गया। यह बच्चे किसी विशेष वर्ग, समुदाय, धर्म, जाति आदि के नहीं बल्कि बच्चे ही है जो भोले- भाले, चंचल है। जिस तरह से इनकी आयु बढ़ती जाती है वैसे ही वह नयी वस्तुओं के सम्पर्क में आते हैं। फिर उन में वस्तुओं के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा प्रबल होती है। इसी अभिव्यक्ति से उनकी बुद्धि का विकास होता है। बाल्यावस्था में

जिज्ञासा और रूचि से भाषा का विकास होता है क्योकि बच्चों में ग्रहण शक्ति तीव्र होती है। वह अपनी ज्ञानन्द्रियों का प्रयोग करके सीखता है। वे स्वयं और समाज के बारे में जानना चाहता है।

आज समाज में बढ़ते अपराधों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आज के मनुष्यों में नैतिक मूल्यों की कमी है। इसी संदर्भ में बाल साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। एक साल से लेकर प्रन्द्रह साल तक का समय एक इंसान के जीवन में अति महत्वपूर्ण है। देखा जाए तो यह समय बहुत ही नाजुक है जहाँ पर बच्चों को अच्छे गुण, संस्कार और नैतिक मूल्यों की अति आवश्यकता है। आज भाग- दौड़ के जीवन में माता- पिता के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं होता कि वह बच्चों को सही मार्गदर्शन कर सके। आधुनिक समय में वैज्ञानिक विकास ने बच्चों को बाल साहित्य से दूर कर दिया है। आज घर में अकेले बच्चे टी. वी, मोबाइल आदि के प्रभाव में है। वे घर पर बिना माता- पिता के अपने खाली समय में हिंसात्मक फिल्में, मोबाइल गेम आदि में व्यस्त रहते है, जो मासूम बच्चों के हृदय में हिंसात्मक प्रभाव छोड़ता है। बच्चों में बाल साहित्य के द्वारा संसार के बारे में अनेक अवधारणाएँ कविता, कहानी या कोई चित्रात्मक किताब से बनती और बिगड़ती है। बाल साहित्य बच्चों में कल्पना का विकास होता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार , "हम सत्य को भी असंभव कहकर छोड़ देते है और बच्चे असंभव को भी सत्य कह कर ग्रहण कर लेते हैं"। देखा जाए तो भारत की सभी भाषाओं में बाल साहित्य का सृजन हो रहा है। बालकों के बौद्धिक और चारित्रिक विकास के लिए उत्तम साहित्य बाल साहित्य की आवश्यकता है। वह बच्चों के व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास करता है। लेकिन हमारे शिक्षा व्यवस्था में बाल साहित्य के लिए कोई विशेष स्थान देखने को नही मिलता। कुछ लोग तो बाल साहित्य को सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र मानते है, मगर बाल साहित्य तो बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखा जाता है। जिसमें बच्चों की मानसिक क्रियाओं का वर्णन होता है। वह उसे वैज्ञानिक ढंग से समझने का प्रयास करता हैं। डॉ. जाकिर हुसैन की बाल कहानियाँ- पूरी जो कढ़ाई से निकल भागी और मुरगी चली अजमेर ,इन बाल कहानियों ने संसार में कुछ नया जोड़ती है। जैसे- पूरी जो कढ़ाई से निकल भागी मज़ेदार और हास्य भरी कहानी है कि पढ़ते- पढ़ते पेट दुखने लगे। शीला गुजराल की कहानी 'कठपुतली नर्स' मार्मिक कथा है, जिसमें एक संवेदनशील बच्ची की मनोदशा का उल्लेख किया है। शिवानी ने बच्चों में गहरी जिज्ञासा के साथ- साथ कथा से रस बरसाती हुई बाल कहानियों का लेखन किया है -मुलन, सूखा गुलाब, मामा गरजो, हमका बिठाओ धुआँगाड़ी में बबुआ, बहुत ही मज़ेदार कहानियाँ है शशिप्रभा शास्त्री की कहानी आसमान की मेज़ आधुनिक बच्चे के मन की समस्या के बारे में और भीतरी उलझनों के सवाल है। जंगल के भीतर में बच्चों के साहस और समझदारी से मुसीबत में किस तरह से रास्ता निकलता है।

सामाजिक पक्ष

भारतीय संस्कृति, सभ्यता, आदर्श और नैतिक मूल्य आदि पर मनुष्य के जीवन की नींव रखी गई है। हमारे समाज में प्राचीन समय में संयुक्त परिवार व्यस्था का प्रचलन था। जिसमें दादा-दादी, चाचा- चाची आदि सभी एक ही छत के नीचे रहते थे और बच्चों को भी संस्कारों, आदर्शो और नैतिक मूल्य की खुराक अच्छी – खासी मिलती थी। बच्चे बड़ों की निगरानी में पलते और बढ़ते थे। लेकिन जैसे- जैसे समय बदला वैसे ही स्थितियाँ भी बदल गई। ब्रिटिश सरकार की पराधीनता की बेड़ियों में आज भारतीय समाज की व्यवस्था, मानवीय मूल्य दम तोड़ चुके है। आधुनिक जीवन में संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवार ले चुके है। अब बच्चे और माता- पिता रहते है। वही माँ के पास अपने बच्चे को संस्कार देने, उनके साथ समय

बिताने का समय ही नहीं या यह कहे कि उसके पास खुद संस्कारों की कमी है। आज दादी, नानी की कहानियाँ, लोरियों की बाते तो किताबों में ही रह गई है। रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखी कहानी अमृत की वर्षा बहुत ही चर्चित कहानी है। यह बच्चों में नैतिक मूल्य की सीख देती है। कहानी में परोपकार, करूणा और सरलता की छवि बाल मन की गहराई को छूती है। सुभद्रा कुमारी चौहान की हींगवाला बहुत भावनात्मक कहानी है, जो बच्चों के मन को छू लेती है। प्रेमचंद जिन्हें कथा- सम्राट कहा जाता है वह बाल कथा भी करते थे। उनकी बाल कहानियाँ बालकों के दिल में उतरकर उन्हें मानवीय मूल्य और करूणा युक्त बनने की सीख देती है। प्रेमचंद ने मिट्ठू, पागल हाथी, शेर और लड़का, गुल्ली डंडा, दो बैलों की कथा, बड़े भाई साहब आदि कहानियाँ भले वो बच्चों के लिए नहीं लिखी गई, मगर बच्चे भी उनसे भरपूर रस का आनंद ले रहे है। ईदगाह उनकी मनोवैज्ञानिक कहानी है, जिसमें हामिद के बालमनो दशा का वर्णन किया गया है।

भारत की बात करें तो 25% बच्चे अपना बचपन भूलकर कठोर परिश्रम करते है ताकि वह अपना और परिवार का पेट पाल सके। बहुत से बच्चे सड़कों पर पत्थर तोड़ते, फैक्टरियों में काम करते, पटाखों के कारखानों में जोखिम भरे काम करते, होटलों में जूठे बरतन मांजते, घरों की सफाई करते, चलती बसों- ट्रेनों में चीज़े बेचते या फिर बूट पालिश करते है। यह समस्याएँ हमारे देश के लिए बहुत बड़ी है। इसका समाधान होना चाहिए। बच्चों के जीवन में सुधार के लिए कड़े कानून व्यवस्था करने की जरूरत है ताकि बच्चों को स्कूल में भेजा जा सके, उनके आर्थिक जीवन में भी सुधार करके बच्चों को स्कूल भेजा जा सके। इन बच्चों को अधिक सहायता की आवश्यकता है।

आर्थिक पक्ष

बच्चे अपनी जान को जोखिम में डालकर काम करने को मज़बूर है क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह दो वक्त की रोटी को पाने के लिए गलत रास्तों का चुनाव करने को मज़बूर हो जाते है। संजीव जायसवाल 'संजय' की बाल कहानियो में बाल मज़दूरी की कथा को प्रस्तुत किया गया है जैसे बाँसुरी वाला, बूट पालिश, गुब्बारे वाला आदि में बच्चों की आर्थिक स्थिति का वर्णन किया गया है। इनकी एक कहानी 'लोहार का बेटा' इस कहानी के माध्यम से निम्नवर्ग की आर्थिक दशा की बात की गई है। समाज की पुरानी सोच को नई सोच से लोहार की आर्थिक स्थिति में सुधार करने का अच्छा प्रयास किया है।

गरीबी और बेरोज़गारी

इन बच्चों के परिवारों में बहुत गरीबी है। इसलिए वह रोटी के लिए सड़कों पर काम करते या फिर भीख माँगते है। उनके माता- पिता के पास कोई ढंग का काम नही है कि वह अपने परिवार का पेट भर सके। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है वह काम तो करते है मगर नशे, शराब आदि में उड़ा देते है। वह परिवार के बारे में नहीं सोचते ऐसी हालत में छोटे- छोटे बच्चों को गरीबी का सामना करना पड़ता है। फिर वो बेचारे बच्चे चोरी करेंगे, डाका डालेंगे। इस तरह वह गुनाह के दलदल में फँसते जाएगे। इन बच्चों के सुधार के लिए हमारे देश की सरकार और हम सब की भी जिम्मेदारी बनती है कि बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान कराई जाए ताकि वह अच्छे नागरिक बन सकें और समाज से बुराइयाँ दूर हो सके। पढ़ने – लिखने से वे कमाने के लायक होगे। शंकुतला सिरोठिया की कहानी आशीर्वाद एक सुधारवादी कहानी है। इस में एक अपराधी बब्बू की कथा है, जो चोरी करता है, जेल भी जाता है। उस के जीवन के सुधार को प्रस्तुत किया गया है। संजीव

जायसवाल 'संजय' की कहानी 'गरीबों का अधिकार' में लोगों को सरकार की ओर से जो अधिकार दिए गए है उनका वर्णन है।

इलैक्ट्रानिक मीडियाः

बच्चे कल्पनाशील होते है और मीडिया भी बच्चों की कल्पना से मिलती- जुलती है। आज बच्चे मीडिया के प्रभाव में है। मीडिया आज बच्चों की भाषा, संस्कार, व्यवहार, चिंतन को प्रभावित कर रहा है। दूसरी तरफ देखे तो वह उनका मार्गदर्शक और आदर्श भी बन चुका है। बच्चे ही नहीं बल्कि बड़े भी इस के आदि हो चुके है। आधुनिक समय में टी.वी. के विभिन्न चैनलों पर अश्लीलता ने बच्चों को समय से पहले ही बड़ा बना दिया है। खुले रूप में नग्नता तथा कामुकता के निरंतर प्रसार से बच्चों की मानसिकता दूषित हो रही है। वह समय से पहले ही यौन विषयों में रूचि लेने लगते है और यौन अपराधों में भी शामिल हो जाते है। टी. वी पर पारिवारिक षडयंत्र, हिंसा उनके व्यवहार को भयग्रस्त तथा तनावग्रस्त बना देते है। ज्यादातर बच्चों को प्रभावित करने के लिए टी. वी के विज्ञापनों में बाल कलाकारों को मॉडल के रूप में लिया जाता है। यह चिंतन का विषय है। बच्चों को इस के प्रभाव से मुक्त करने के लिए बाल साहित्य के साथ जोड़ना चाहिए। ताकि उनके विचारों को उड़ान मिल सकें। बच्चों में बाल कविता, बाल कहानी, बाल गीत आदि के माध्यम सकारात्मकता ऊर्जा उत्पन्न करनी चाहिए। रामवचन सिंह 'आनंद' ने बहुत सुंदर वैज्ञानिक कथाएँ लिखी है, जो बच्चों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से संपन्न करती है और उन्हें अधिक तर्कशील बनाती है- अनोखा उपहार, प्रायश्चित, फटी शर्ट, ग्रहों का चक्कर। महीप सिंह की कहानियाँ आधुनिक जीवन से जुड़ी कोई न कोई नई समस्या या नया विषय होता था जैसे- एक थी संदूकची, जीभ का रस आदि है। बच्चों को सही दिशा दिखाने का कार्य किया है। संजीव जायसवाल 'संजय' ने सोशल मीडिया को माध्यम बनाकर भी बहुत ही रोचक कहानियों लिखी है- चूहे ने काटा माउस को, मुड़ने लगा राकेट, क्रिकेट- क्रिकेट की तू-तू, मैं-मैं, शरारती रिमोट आदि इन कहानियों में व्यक्ति की रोज़ मरा के जीवन में संपर्क में आने वाली चीज़ों के बारे में लिखा है। इनकी कहानियों में कुछ न कुछ नया देखने को मिलता है, जो बच्चों को लुभाता है जैसे- टूटा पंख, चंदा मामा, सूरज का गुस्सा आदि सभी बाल कहानियाँ और चित्र भी बहुत अधिक चित्ताकर्षक हैं।

बच्चे हमारी आशा है, हमारा भविष्य है और आने वाले कल की तस्वीर है। आज बच्चों से उनका बचपन छिन चुका है। बच्चों से भोलापन, सहजता, सरलता, चंचलता तथा सहनशीलता आदि के मानवीय भाव भी लुप्त होते जा रहे है। एक स्वस्थ समाज और उन्नतशील देश के निर्माण के लिए आवश्यक है कि बच्चों को स्वस्थ एवं स्वाभाविक ढंग से विकसित होने दिया जाए।

आज के समय में अति जरूरी है कि स्कूलों का वातावरण सहज बनाया जाए। माता- पिता को भी अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाने की जरूरत है। बच्चो के साथ अधिक से अधिक समय बिताए और बातों ही बातों में नैतिक मूल्यों की सीख दें। साथ में बच्चों को बाल साहित्य दिया जाये ताकि वह जीवन में बचपन का आनंद प्राप्त करे। बच्चों के साहित्य लिखना बड़ी चुनौती की बात है। मगर बच्चों को सही दिशा दिखाए बगैर समाज को बदलना संभव नहीं है। समाज में सही बदलाव के लिए छोटे बच्चों को सही शिक्षा व आदर्श प्रदान करने में सफल हुए तो एक नये भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि समकालीन बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान, जीवन मूल्य और संचार माध्यमों में क्रांति आई है। लेकिन बच्चों को मनोरंजन और कल्पना से यथार्थ तक की अभिव्यक्ति करने वाले साहित्य का आज भी उतना ही महत्व है। इनके माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता, रागात्मकता और संवेदनशीलता के मानवीय गुणों का संचार होता है। आज के दौर में मानवीय गुणों का महत्व और भी बढ़ जाता है। उनके नैतिक मूल्य की कमी को दूर किया जा सकें । बाल विमर्श के संदर्भों के अध्ययन के लिए बच्चों, समाज के निर्माण में बाल साहित्य का अहम भूमिका निभाता है। इस प्रकार बाल विमर्श में अनेक आयाम है जो समय और समाज के परिप्रेक्ष्य में बाल मन को समझकर सुधार करने के योग्य बनाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लेखः निरंकार देव सेवक, आजकल(पत्रिका)- (स) फरहतनवीन, नवम्बर, 2011, नई दिल्ली पृ. 48.
2. डॉ. हरशिंदर कौर, बच्चों की मनोवैज्ञानिक समस्याएं और उनका इलाज, आधार प्रका. एस. सी.एफ. 267. सक्टेर- 16, पंचकूला- 134113 हरियाणा. पृ. 15, 16, 17.
3. लेखः अखिलेश श्रीवास्तव चमन, आजकल(पत्रिका) नवम्बर, 2009. पृ. 6.
4. डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तन, भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का प्रका. लखनऊ, पृ. 2,4.
5. डॉ. शकुन्तला कालरा, हिन्दी बालसाहित्य आधुनिक परिदृश्य नमन प्रका. नई दिल्ली- 110002 पृ. 15, 16. 17.
6. प्रकाश मनु, हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रका. नई दिल्ली- 110002, 2018. पृ. 155-199.
7. लेखः वर्षा रानी, हिन्दी कथा साहित्य में बाल विमर्श, श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक(पत्रिका)- कानपुर, 208011.